हकें महंमद मोमिनों वास्ते, कई मेहेर कर खेल देखाए।
एक दूर किए इनों वास्ते, एक नजीक लिए बोलाए।।५८ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी और मोमिनों को मेहर करके यह खेल दिखाया। इनके वास्ते ही एक फरिश्ते अजाजील को दूर भेजा और असराफील फरिश्ते को अपने पास बुला लिया।

मोमिनों की सरीयत में, आया मैकाईल बुध बल।
पीछे बीच हकीकत, आया जबराईल सामिल।।५९ ।।

मोमिनों की शरीयत में संसार की बुद्धि का फरिश्ता ब्रह्मा आया और हकीकत का ज्ञान लेकर जबराईल फरिश्ता भी साथ में चल पड़ा।

आखिर आए असराफीलें, खोले मुसाफ मारफत द्वार।
दिन बका किया जाहेर, खोले अर्स अजीम नूर पार।।६० ।।

आखिर में असराफील ने आकर कुरान के मारफत के ज्ञान के दरवाजे खोल दिए। अक्षर के पार अखण्ड परमधाम को संसार में जाहिर कर दिया।

महामत कहे ए मोमिनों, कही हकीकत फरिस्तों।
अब कहूं कजा और फितना, जो उठया बरारब मों।।६१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने यह फरिश्तों की हकीकत बताई है। अब न्याय की और झगड़े की हकीकत बताती हूं जो बरारब में उठी।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ४२८ ।।

बाब कजाका

जैसा अमल रात का, चाहिए ज्यों चलाया।
बीच सरे जबराईलें, किया हक का फुरमाया।।१ ।।

अज्ञान के अंधेरे में श्री राजजी महाराज के फुरमान के अनुसार जबराईल फरिश्ते ने शरीयत का शासन चलाया।

रसूलें सरा रात का, चलाया हक अदल।
जब रसूल जबराईल ले चले, तब क्यों चले अदल अमल।।२ ।।

अज्ञान के अंधेरे में श्री राजजी महाराज का सच्चा न्याय रसूल साहब ने चलाया। जब रसूल साहब और जबराईल चले गए, तो फिर सच्चा न्याय कैसे चले?

कजा कही तीन सकस की, एक भिस्ती दोए दोजख।
भिस्ती हक को चीन्ह के, अदल कजा करी हक।।३ ।।

कुरान में तीन लोगों के न्याय का वर्णन है। जिनमें एक को बहिश्त मिली, दो को दोजख की अग्नि में जलना पड़ा। जिनको बहिश्त मिली, उन्होंने खुदा की पहचान कर ली। यही खुदा को न्याय करना था।

कही कजा दूजे सकस की, हक से करी चिन्हार।
पर अदल कजा तो भी ना हुई, तो लिख्या बीच नार।।४ ।।

दूसरे आदमी ने भी खुदा की पहचान तो की, परन्तु सच्चा न्याय नहीं दे सका। ऐसा किताब में लिखा है।

Nijanand App

तीसरे जो कजा करी, अपनी जाहिल अकल।
सो तो कह्या दोजखी, आगे कजा न सकी चल।।५।।

तीसरे आदमी ने जो न्याय का काम किया वह अपनी मूर्ख बुद्धि से किया, इसलिए इसको दोजख की आग में जलना पड़ा। आगे न्याय का काम बन्द होगा, अतः कजा (न्याय) नहीं मिल सकी।

कह्या साहेदी भी रवा नहीं, जिन को नहीं ईमान।
और रवा नहीं खूनी की, ना रवा खुदी गुमान।।६।।

जिनका ईमान सच्चा नहीं उनकी गवाही भी लेनी ठीक नहीं। खूनी आदमी की तथा अभिमानी आदमी जिनको अहंकार है, की गवाही नहीं लेनी चाहिए।

कही अदल यों साहेदी, कहां साहेद पाइए सोए।
इन जमाने नुकसानमें, अदल कजा क्यों होए।।७।।

कुरान में न्याय का और गवाहों का इस तरह ब्यौरा लिखा है वह वहां से लें तो फिर इस झूठे जमाने में सच्चा न्याय कैसे किया जाए?

अब्दुल्ला बिन उमरें, छोड़ कजा दिया जवाब।
सोए लिख्या बीच हदीसों, सुनो तिनों का सवाब।।८।।

उमर के बेटे अब्दुल्ला ने न्यायाधीश का काम छोड़ दिया। यह बात हदीस में लिखी है। उसका फल सुनो।

कहे उस्मान सुन अब्दुल्ला, कजा करता था उमर।
सो तो तेरी वारसी, तूं छोड़े क्यों कर।।९।।

उस्मान ने अब्दुल्ला से कहा कि तेरे पिता उमर न्यायाधीश थे। उस पर तेरा वारिसाना अधिकार है। तू न्याय का काम क्यों छोड़ रहा है?

कहे अब्दुल्ला उस्मान को, कजा न मुझ से होए।
मैं पाई खबर रसूल से, कर सकसी ना अदल कोए।।१०।।

अब्दुल्ला ने उस्मान को जवाब दिया कि न्याय का काम मुझसे नहीं होगा। मुझे रसूल साहब से पता चला कि आगे न्याय का काम कोई नहीं कर सकेगा।

कजा करते उमर को, कदी सूझत नाहीं सुकन।
तब पूछत जाए रसूल को, सो सब करत रोसन।।११।।

न्याय करते समय मेरे पिता उमर को समझ नहीं आती थी तो वह रसूल साहब के पास जाकर पूछते थे और वह सच्ची बात बता देते थे।

रसूल अदल कछू चाहते, तब जबराईल ल्यावत खबर।
तो कजा करता था उमर, जो रसूल थे सिर पर।।१२।।

रसूल साहब यदि न्याय के समय कुछ पूछना चाहते थे तो जबराईल खुदा के पास से खबर लाकर देता था। इस तरह से जब तक रसूल साहब की कृपा प्राप्त थी, तभी मेरे पिता उमर न्याय करते थे।

Nijanand App

बोहोत कही उस्मान ने, कजा न करी कबूल।
मैं इन्साफ अदल कर ना सकों, तो कहां पाऊं जबराईल रसूल।। १३ ।।

उस्मान ने बहुत समझाया, परन्तु अब्दुल्ला ने न्याय का काम करना पसन्द नहीं किया। उसने साफ कह दिया कि न मेरे पास रसूल साहब हैं और न जबराईल। इसलिए मैं सच्चा इन्साफ नहीं कर सकता।

कजा अदल कही हक की, सो हत चली एते दिन।
कही साहेदी इन भांत की, आगे क्यों चले रसूल बिन।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज की अदालत का सच्चा न्याय इतने दिन तक ही चला। अब गवाह भी इस तरह के सच्चे नहीं रह गए, इसलिए रसूल साहब के बाद न्याय का काम कैसे चले?

और भी देखो साहेदी, जो रसूलें फुरमाए।
जब हक ईमान तरफ देखिए, तो अब क्यों कजा करी जाए।। १५ ।।

और भी रसूल साहब ने जो कहा है उसकी तरफ देखो। साथ में जब खुदा की तरफ ईमान रखने वालों को देखते हैं, तो लगता है कि अब इन्साफ नहीं होगा।

कह्या रसूलें माज को इमन, अदल कजा करो जाए।
क्यों कर करेगा अदल, सो मोकों कहो समझाए।। १६ ।।

रसूल साहब ने माज को कहा कि तुम इमन देश में जाकर इन्साफ का काम करो। फिर माज से पूछा कि तू जाकर न्याय कैसे करेगा। मुझे बता।

तब कह्या माज बिन जबलें, करूं कजा देख मुसाफ।
कहे रसूल जो तूं अटके, तो क्यों करे इन्साफ।। १७ ।।

तो जबल के लड़के माज ने उत्तर दिया कि मैं कुरान देखकर न्याय करूंगा। रसूल साहब ने कहा अगर तू कुरान में अटक गया, तो फैसला कैसे करेगा?

सुंनत जमात राह लेय के, करूं कजा अदल।
कहे रसूल जो इत अटके, कहे करों अपनी अकल।। १८ ।।

माज ने रसूल साहब से कहा कि मैं फिर धर्म पर चलने वालों का अनुकरण कर फैसला करूंगा। रसूल साहब ने कहा कि यदि इसमें भी रुकावट आ गई। तब माज ने उत्तर दिया अपनी अक्ल से फैसला करूंगा।

तब मारया रसूलें छाती मिने, केहे के अल्हंमदो–लिल्लाह।
कही रजामंदी खुदाए की, है सिर रसूल अल्लाह।। १९ ।।

रसूल साहब ने खुदा खैर करे (अलहम्दो लिल्लाह) कहकर अपनी छाती ठोक ली। अल्लाह से विनती की कि मुझे बचाकर रखना।

ताथें अव्वल कजा महंमद लग, पीछे अदल क्यों होए।
हक तरफ का सिलसिला, क्यों कर पाइए सोए।। २० ।।

इसलिए न्याय का सिलसिला रसूल साहब तक चला। रसूल के बाद न्याय कैसे हो सकता है? खुदा की तरफ से जबराईल फरिश्ता जो जानकारी लाता था, वह कैसे मिलती?

Nijanand App

जबराईल साथ महंमद, सो तो हुए बीच परदे।
अब अदल कजा बीच दुनी के, कौन चलावे ए।। २१ ।।

जबराईल फरिश्ता मुहम्मद साहब के तन छोड़ते ही परदे में हो गया। अब दुनियां के बीच न्याय कौन चलाता?

रह्या अदल इस दिनलों, कहे हदीस महंमद।
आगे अदल ना चल सके, याही लग थी हद।। २२ ।।

रसूल साहब ने हदीस में कहा है कि न्याय करने का कार्य यहीं तक चला। आगे नहीं चला, क्योंकि खुदा का ऐसा ही आदेश था।

पीछे जमाने रसूल के, पैदा होसी बलाए बतर।
अदल न चले तिनमें, एक रसूल बिगर।। २३ ।।

रसूल साहब के जमाने के बाद हालात बद से बदतर हो गए। एक रसूल साहब के न होने से न्याय नहीं हो सका।

कह्या जमाना आवसी, झूठा और नुकसान।
यार अस्हाबों कतल, तरवार उठसी जहान।। २४ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि झूठ और फरेब का जमाना आएगा। मेरे मानने वालों में ही कत्ल होंगे, तलवारें चलेंगी।

जब रसूल आवें फेर कर, खोलसी द्वार हकीकत।
खतम है याही पर, होवे तबहीं अदालत।। २५ ।।

जब मुहम्मद साहब फिर से हकी स्वरूप बनकर जाहिर होंगे, उस समय हकीकत के ज्ञान से सब दरवाजे खुल जाएंगे। तब दुनियां में जो जुल्म हो रहा है, वह समाप्त हो जाएगा। तब दुनियां को सच्चा न्याय मिलेगा।

सब बखतों कहे रसूल, अव्वल बीच आखिर।
कही कजा रसूल जुबांए, करे सांच सबों पैगंमर।। २६ ।।

खुदा के हुकम से ही अव्वल, बीच और आखिर में सभी मौकों पर, (अवसरों पर) रसूल का होना बताया है। आखिर के समय में मुहम्मद साहब की हकी सूरत की वाणी से पैगम्बरों को सच्चा न्याय मिलेगा।

देखावें खोल मुसाफ दिल, सक कुफर उड़ावे सबका।
कर कजा साफ अदल, सो पावे तौहीद राह।। २७ ।।

श्री प्राणनाथजी इमाम मेंहेंदी के रूप में आकर कुरान के सारे रहस्य खोल देंगे। संसार के सब कुफ्र समाप्त करके दुनियां का सच्चा न्याय करेंगे, जिससे दुनियां को एक पारब्रह्म की सच्ची राह मिल जाएगी।

कजा करे फजर कर, हकीकी अदालत।
सबों दिलों करे अदल, दिल सूर महंमद मारफत।। २८ ।।

श्री प्राणनाथजी की सच्ची अदालत में ज्ञान का सवेरा करके सबका न्याय चुकाया जाएगा। इस तरह से इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी का मारफत ज्ञान का सूर्य सबके दिलों का फैसला कर देगा।

Nijanand App

सब सय सिर महंमद की, आखिर कही हिदायत।
और छोटा बड़ा जो कोई, कही महंमद इमामत।। २९ ।।

फिर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि की वाणी सबसे ऊपर होगी। फिर दुनियां में छोटे से छोटा या बड़े से बड़ा आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दिखाए रास्ते पर चलेंगे।

नबियों सिर नबी कह्या, सिर पैगंमरों पैगंमर।
आगे होए लेसी सब को, बीच बका पट खोल कर।। ३० ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को सभी नबियों के सिरदार और सब पैगम्बरों के मालिक बताया है। जो परमधाम के सब दरवाजे खोलकर अग्रसर होकर सब को पहचान कराएंगे।

पेहेलें कबर से मैं उठूं, मेरे भाइयों की खातिर।
ज्यों काम करता हों अव्वल, त्यों करोंगा उठ आखिर।। ३१ ।।

रसूल साहब ने कहा कि सबसे पहले मैं अपने भाइयों की खातिर तन धारण करूंगा। उनके वास्ते जो काम अभी करता हूं, वैसा ही आखिर को आकर करूंगा।

मैं नजूम कह्या भाइयों वास्ते, पीछे कूच किया दुनी से।
सोई भाइयों आगे नजूम, आए खोलों मेरा मैं।। ३२ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैंने अपने भाइयों के वास्ते सभी बातों की इशारतों में भविष्यवाणी की है। उसके बाद दुनियां छोड़ी है। अब मैं अपने भाइयों के आगे अपनी छिपाई बातों को स्वयं आकर खोलूंगा।

रसूलें कह्या अबीजर को, कहां रेहेता मेरा गम।
कह्या मैं नहीं जानत, कहो रसूल अल्ला के तुम।। ३३ ।।

रसूल साहब ने अबीजर से पूछा कि मुझे सबसे अधिक किसकी चिन्ता रहती है? अबीजर ने कहा मुझे क्या मालूम है? अल्लाह के रसूल आप स्वयं बताएं।

तब फेर कह्या रसूल ने, मेरा गम है भाइयों माहें।
कहे अबीजर ऐसे भाई, सो क्या अब इत नाहें।। ३४ ।।

तब रसूल साहब ने कहा कि मुझे अपने भाइयों की चिन्ता है। तब अबीजर ने कहा कि क्या आपके वह भाई अभी यहां नहीं हैं?

रसूल कहे आखिर आवसी, कह्या क्यों पेहेचानों तिन।
कहे बड़ी सिफत है तिन की, वाकी पेसानी रोसन।। ३५ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मेरे भाई आखिर में आएंगे। तो अबीजर ने पूछा कि मैं उनको कैसे पहचान सकूंगा? तो रसूल साहब ने कहा उनकी महिमा बहुत भारी है। उनके चेहरे चमकते होंगे।

तब अबाबकर यारों कह्या, क्या भाई न तुमारे हम।
रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम।। ३६ ।।

तब अबूबक्र यार ने कहा कि क्या हम आपके भाई नहीं हैं? तो रसूल साहब ने कहा कि भाई हमारे और हैं। तुम हमारे यार हो।

Nijanand App

जो हकें इलम मोहे दिया, सो देसी इमाम भाइयों को।
बलाए दफे दुनी रिजक, सो भी हक करें वास्ते इनों।। ३७ ।।

खुदा ने जो ज्ञान मुझे दिया है, वैसे ही जागृत बुद्धि की वाणी मेरे भाइयों को इमाम मेंहेंदी आकर देंगे। वह खास मोमिनों के कष्ट और बलाओं को दूर करेंगे। वह भी श्री राजजी महाराज स्वयं इनके वास्ते ही दुनियां का रिजक (पालन-पोषण) और सब प्रबन्ध करेंगे।

बिन खुदी बिन गुमान, और साफ दिल ईमान।
सरे दो साहेद चाहिए, ऐसे सिदक मुसलमान।। ३८ ।।

उनके अन्दर अहंकार नहीं होगा। साफ दिल वाले होंगे। ईमान वाले होंगे। ऐसे धर्मनिष्ठ मोमिन ही न्याय के समय गवाही के रूप में (दो) गवाह चाहिए।

ऐसे तो पाइए बीच फजर, जो अर्स दिल कहे मोमिन।
करें कजा मुसाफ ले, सो भी बीच गिरो इन।। ३९ ।।

जिन मोमिनों के दिल को अर्श कहा है, वह फजर के वक्त आएंगे और फिर तारतम वाणी से मोमिनों में बैठकर सब दुनियां का न्याय चुकाएंगे।

तो कजा उतलों अटकी, ताही दिन बदल्या बखत।
रसूल खड़े थे ले सिदक, पीछे उठे फितुए आखिरत।। ४० ।।

यह न्याय का काम तब तक रुका रहा। श्री प्राणनाथजी के आते ही समय बदल गया। रसूल साहब के बाद जो झगड़े-विवाद खड़े हो गए थे, वह बन्द हो गए।

पीछले सरे दीन मनसूख, सबों किए जो थे बीच रात।
आए पैगंमर सब इत, कर दिन उड़ाई जुलमात।। ४१ ।।

श्री प्राणनाथजी के जाहिर होने से पहले जितने धर्म-पंथ चल रहे थे, सबको रद्द कर दिया। सब धर्मों के चलाने वाले पैगम्बरों का ज्ञान समाप्त कर दिया। वह सब श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गए।

ए सिपारे उनतीसमें, सब लिखे हैं सुकन।
ए बेवरा करे लदुन्नी, वारस जो अर्स तन।। ४२ ।।

यह वचन कुरान के उन्तीसवें सिपारे में लिखे हैं। कुरान के जो वारिस मोमिन हैं, वही तारतम वाणी से इसका विवरण समझ सकेंगे।

सांचे साहेद इन उमतें, हककी कजा अदल।
यों कजा महंमद जुबांए, करें सिफायत अर्स दिल।। ४३ ।।

सच्चे गवाह इन मोमिनों की जमात में ही मिलेंगे, जिससे खुदा का न्याय आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जबान से सच्चा होगा, जिसकी प्रशंसा मोमिन जिनको अर्श दिल कहा है, करेंगे।

एक दीन होसी याही से, द्वार खोले हकीकत।
दिन देख सिपारे तीसरे, डूबी खुदी रात जुलमत।। ४४ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ही हकीकत के सारे दरवाजे खोलकर सबको एक दीन निजानन्द सम्प्रदाय में लाएंगे। कुरान के तीसरे सिपारे में फजर के दिन, न्याय के दिन का बयान है, जिसे देखकर भी दुनियां अन्धकार में डूबी है।

Nijanand App

मैं मैं करता रात का अमल, कह्या गैर हक था नाबूद।
सूर ऊगे मारफत सब मिले, हुआ सबों मकसूद।। ४५ ।।

अन्धकार में चलने वाले सभी धर्म, पन्थ, पैंडे झूठे और नाचीज थे। मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय होने से अब सब मिलकर प्राणनाथजी के पास आ रहे हैं और सबकी इच्छाएं पूरी की जा रही हैं।

मोमिन नजीकी हक के, जाको हकें दई विलायत।
नूर पार जाको वतन, करें आखिर अदालत।। ४६ ।।

मोमिन (रूहें) खुदा के नजदीकी कहे जाते हैं। इनको श्री राजजी महाराज ने परमधाम दे रखा है। जिनका घर अक्षर के पार परमधाम है, वही सच्चा न्याय अन्त में करेंगे।

विलायत दई हकें इनको, यासों चीज पाइए इसलाम।
तो हिजाब न आड़े वजूद, हिजाब न आड़े काम।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज ने इन मोमिनों को ही परमधाम (विलायत) के अखण्ड सुख दे रहे हैं, इसलिए सच्चे दीन (धर्म) की बातें इनसे ही मिलेंगी। इनके शरीर और काम करने के तरीकों में खुदा के बीच कोई परदा नहीं रह जाएगा।

हिजाब न रह्या बीच फकीरी, ऐसा हक इलम बेसक।
यों नजीक खुदाए के, अदल कजा करे हक।। ४८ ।।

मोमिन ऐसे फकीर होंगे कि जागृत बुद्धि की वाणी से निःसन्देह होकर इनके और खुदा के बीच परदा नहीं होगा। इस तरह से खुदा के नजदीकी होने से सबको सच्चा न्याय देंगे।

महामत कजा अदल, करे रसूल तीन सूरत।
बसरिएं मांग्या जिदनी इलम, कजा हकी सूरत जुबां कयामत।। ४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मुहम्मद साहब की तीन सूरतें ही बसरी, मलकी और हकी दुनियां को सच्चा न्याय देंगी। बसरी सूरत ने तो वास्तविक संसार का न्याय किया और हकी सूरत के ज्ञान से सारी दुनियां का न्याय कर सब को अखण्ड मुक्ति मिली।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४७७ ॥

बाब फितनेका

मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन।
तब अर्ज करी आरबों, नबी दिया न जवाब तिन।। १ ।।

रसूल साहब ने अल्ला ताला से विनती की कि स्याम इमन (भारतवर्ष) की जमीन पर कृपा करना। तब अरब के लोगों ने रसूल साहब से विनती की, जिसका उत्तर रसूल साहब ने कोई नहीं दिया।

फेर मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन को।
तब फेर अर्ज करी आरबों, क्या है बरारबमों।। २ ।।

रसूल साहब ने दुबारा स्याम इमन (भारत) के रहने वालों के लिए खुदा से कृपा मांगी। तब अरब के रहने वालों ने विनती की, हे रसूल साहब! अरब में क्या है?

Nijanand App